International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 01(II), January - March, 2023, pp. 113-118

स्त्री सहित्य और वैचारिकी संदर्भ

राहुल कुमार यादव*

सार

'इक्कीसवीं सदी के दो दशक गुजर जाने के बाद समाज और मनुष्य के अस्तित्व में बहुत परिवर्तन नहीं हुआ है, पर विश्व–राजनीति विज्ञान, तकनीक और संस्कृति के ऊपरी संस्तरों में गहरे परिवर्तन हो गए हैं। पुराने आंदोलन व प्रश्न अप्रासंगित हो चुके हैं। समस्याएं अब भी अनसुलझी हैं। आगत युग नई वैचारिकी, अधिक सुसंगत व समग्र दृष्टि और नए समाधानों की मांग कर रहा है। नारीवादी–चेतना का समग्र सार–संकलन तथा बीती एक सदी का अनुभव उसे संभवतः एक नई भाक्ति और नया मोड़ दे। नारीवादी–आंदोलन, नारीवादी बौद्धिक–विमर्श और नारीवादी–सृजन में एक नए तारतम्य की जरूरत है, साथ ही इस आंदोलन के पूरब और परिश्चय में बंटे स्थानीय स्वरूपों की जगह एक ऐसे स्वरूप की भी जो संसार भर की स्त्रियों के साझे दुःख और साझे स्वप्न का महाप्रवाह बन सके। नारीवादी की देश–काल की भिन्ना के अनुसार अनेक व्यख्याएं होती रही हैं। पंश्चिमी देशो और अमेरिका में नारीवाद के प्रश्न अलग रहे, उसी के अनुसार भी उनका स्वरूप भी भिन्न हुआ। एशियाई देशो में स्त्रियों की समस्याओं का स्वरूप अत्यंत जटिल और सांस्कृतिक–सामाजिक ढांचे से गहनता से बद्ध रहा है।

शब्दकोशः *स्त्री सहित्य, नारीवादी–सृजन, नारीवादी–आंदोलन, नारीवादी बौद्धिक–विमर्श, सांस्कृतिक–सामाजिक ढांचा।*

प्रस्तावना

साहित्य में स्त्रीवाद आज एक प्रबल और स्थापित विचार है। इसका संबंध जहां एक ओर साहित्य से है, वहीं दूसरी ओर मानव–समाज के विकास के इतिहास से भी। जब हम आधुनिक साहित्य की बात करते हैं तो उसका सीधा अर्थ यह निकलता है कि मनुश्य के इतिहास के आधुनिक काल में उत्पन्न आधुनिक–मूल्यों पर आधारित साहित्य। आधुनिक–मूल्य उस आधुनिक दुनिया का सृजन है, जो अनेक ऐतिहासिक प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप अस्तित्व में आई। सबसे पहले 13वीं–14वीं सदी में उत्पन्न हुई यूरोपीय–नवजागरण, प्रबोधन तथा ज्ञानोदय की परंपराओं ने विज्ञान , कला और विचार की दुनिया में मूलगामी परिवर्तन कर दिया। उसके बाद औद्योगिक क्रांति ने वे परिस्थिवियां पैदा कर दीं, जिनसे एक नया मानव–जीवन प्रकट हो सके। 1789 में हुई फ्रांसीसी क्रांति ने समता–समानता–स्वतंत्रता के मूल्यों की घोशणा की। 18 वीं और 19 वीं शताब्दी में यूरोप में जिस दुनिया ने आकार लिया, वह आधुनिक दुनिया थी। दूसरी तरह से यह भी कहा जा सकता है कि पुरानी दुनिया सामंतवादी–संबंधो और मूल्यों से बनी थी, नई दुनिया पूंजीवादी–संबंधो और मूल्यों से निर्मित हुई। आधुनिकता इस नई दुनिया का एक मूल्य थी।

मानव–विकास की यह लंबी कहानी है। आधुनिकता ने साहित्य को बदल दिया और इसके स्वरूप और प्रभाव में भी बुनियादी परिवर्तन कर दिया। फ्रांस में मेरी वोल्स्टनक्राफ्ट ने 'मनुश्य के अधिकारों' की तर्ज पर 'स्त्री–अधिकारों को लेकर यूरोप और अमेरिका में चेतना फैलना शुरू हुई। यह चेतना एक ओर मतदान के अधिकार में चेतना फैलना शुरू हुई। यह चेतना एक ओर मतदान के अधिकार से लेकर अनेक

* शोधार्थी, हिन्दी विभाग, पी.के. विश्वविद्यालय, करेरा, शिवपुरी, मध्य प्रदेश।

स्त्रीवादी–आंदोलनों में विकसित हुई, दूसरी ओर स्त्रियों की समाजिक–मुक्ति की वह प्रक्रिया भी आरंभ हुई, जहां से उनका घर से बाहर के कार्यक्षेत्र में पदार्पण हुआ, शिक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में उनकी यात्रा आरंभ हुई। साहित्य में भी स्त्रीवादी चेतना ने विकास किया। सबसे पहले अंग्रेजी उपन्यास के क्षेत्र में इसकी प्रभावी दस्तक सुनी गई। ब्रोंटी सिस्टर्स, एमिली ब्रोंटी और शार्लोट ब्रोंटी के उपन्यासों – जेन ऑयन, वुदरिंग हाइट्स और एग्नेस ग्रे ने स्त्री–अभिव्यक्ति के नए झरोखे खोल दिए। फिर तो उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में कहानी, कविता, उपन्यास के क्षेत्र में अंग्रेजी, फ्रांसीसी, स्पानी, रूसी आदि भाशाओं में एक के बाद एक स्त्रियों की रचनाएं आने लगीं। बीसवीं सदी में यूरोपीय भाशाओं में स्त्री के रचे साहित्य ने एक नई उछाल ली। 1907 में जन्मी फ्रांसीसी लेखिका सिमोन द बोउबार की प्रसिद्ध पुस्तक द सेकेड सेक्स 1949 में जब छपी तो उसे स्त्रीवादी–साहित्य का घोशणापत्र माना गया। सिनेमा ने कहानियां लिखी उपन्यास लिखे, निबंध लिखे। सभी विधाओं में उनकी रचनाओं ने विश्वव्यापी ख्याति अर्जित की। दुनिया भर की भाशाओं के साहित्य में एक नए युग का सूत्रपात हो चुका था। स्त्रीयों द्वारा लिखित साहित्य ने विशय और अभिव्यक्ति की दृश्टि से नए आयाम प्राप्त करने शुरू किए। यही नहीं नारीवादी विचारों ने पुरूशो द्वारा रचित साहित्य और आलोचनात्क मानदंडो में भी परिवर्तन किए। कैथरीन मैंसफील्ड की कहानियों, एलिजाबेथ टेलर की कविताओं ने दुनिया को देखने का नया नजरिया दिया। 1869 में आई जॉन स्टुअर्ट मिल की पुस्तक द सब्जेक्शन ऑफ वीमेन ने स्त्री की पराधीन स्थिति के उसके व्यक्तित्व–विकास पर पड़ने वाले प्रभावों की गहराई से विवेचना की और यह प्रतिपादित किया कि स्त्री की जो भी सीमाएं सदियों से स्थापित हैं वे सामाजिक मूल्यों और जीवनगत ढांचे का परिणाम हैं, न कि स्त्री के नैसर्गिक गुण। उन्होने अपनी इस किताब में सूक्ष्मता से यह भी बताया कि धरती पर नए जीवन के लिए यह आवश्यक है कि उन सामाजिक दशाओं को समाप्त किया जाए, जो स्त्री का पराधीन मानस और परनिर्भर अस्तित्व गढ़ती हैं। इस किताब ने यूरोपीय मानस को एक नई प्रेरणा और स्त्री को देखने का आधुनिक दृश्टिकोण दिया। 1927 में जब वर्जीनिया वुल्फ को कॉलेज में भाशण देने के लिए निमंत्रित किया गया तो उन्होने लिखा कि मुझसे कहा गया है कि मैं इतनी कमी क्यों रही। इस प्रश्न का विवेचन करते हुए उन्होने एक पूरी किताब ही लिख दी ए रूम ऑफ वंस ओन। इस पुस्तक में उन्होने स्त्री की रचनाशीलता का उसके सामाजिक अस्तित्व से संबंध व्याख्यायित किया और यह बताया कि वह स्त्री की प्रतिभा या रचनात्मक क्षमता नहीं है, जो उसे उत्कृश्ट लेखन से रोकती है, बल्कि वह उसके अस्तित्व की सामाजिक दशाएं हैं युगीन परिवेश और उससे निर्मित साहित्यिक मूल्य–परंपराएं–मानदंड हैं जो स्त्री लेखन के मार्ग की बाधाएं हैं। इतनी बाधाओं ओर प्रतिकूलताओं के बाद भी स्त्री रचनाकारों ने उल्लेखनीय लेखन किया है। यही नहीं उनकी रचनाशीलता एक यात्रा पर है। उसका भविश्य समाज की उन दशाओं पर निर्भर करेगा, जो उसकी आर्थिक स्वतंत्रता ओर मानसिक–स्वतंत्रता को सुनिश्चित करेंगी।

इन आरंभिक चिंगारियों ने भविश्य मे मशाल का रूप लिया। अब स्त्रीवादी –साहित्य का विकास सिर्फ युरोप और अमेरिका में नहीं बल्कि पुरी दुनिया में तेजी से हुआ। बीसवीं सदी में जिस साहित्य ने प्रमुखता से अपनी उपस्थिति विश्व साहित्य के फलक पर दर्ज की वह रूसी–साहित्य, अफ्रीका–साहित्य लातिन–अमेरिकी साहित्य और विश्व भर में विभिन्न भाशाओ में रचा गया नारीवादी–साहित्य था। आज अंग्रेजी, स्पेनिश, फ्रांसीसी रूसी, जर्मन जापानी चीनी के साथ–साथ फारसी अरबी, उक्रेनी , टर्की हिब्रू, फिनिश, डेनिश से लेकर भारतीय उपमहाद्वीप की भाशाओं उर्दू हिंदी, बांग्ला, तमिल, मलयालम, पंजाबी, ओडिया, कन्नड, मराठी, गुजराती आदि में स्त्रियों ने सभी विधाओं में प्रचुर लेखन किया है। और हर भाशा मे ऐसे उपन्यास, कहानियां, कविताएं, आत्मकथाएं तथा वैचारिक साहित्य प्रभूत मात्र में लिखे गए हैं, जो हमारे आधुनिक विश्व–साहित्य की धरोहर हैं। देशों और भूगोंलो के अंतर ने इस साहित्य को जहां एक ओर स्थानीय विशेशताएं दी हैं, वहीं उसे संयोजित करने वाली वैश्विक स्त्री–मुक्ति की चेतना से संपन्न किया है।

वैश्विक फलक पर नदिमन गोर्डमर, माया एंजेलो, टोनी मॉरिसन, सिल्विया प्लाथ, नओमी वुल्फ, डोरिस लेसिंग, मार्गरेट एटवुड, हार्पर ली, अन्ना आख्मातोवा, मारीना त्वेतायेवा, बेला अख्मादूलिया, जैसी लेखिकाओं की लंबी फेहरिश्त है।

हिंदी की आरंभिक लेखिकाओं में उमा नेहरू, कमला चौधरी, सुभद्र कुमारी चौहान शिवरानी देवी उशा देवी मित्रा महादेवी वर्मा आदि थी। इन लेखिकाओं ने अपने आपको नारीवादी आंदोलन से संबद्ध नहीं कहा और न ही अपने लेखन के जरिए सायास रूप से स्त्रीवादी वैचारिकता को पोशित किया। परंतु इन लेखिकाओं के लेखन में भारतीय स्त्री का जीवन–संघर्श और उसके स्त्री होने के अनुभाव का वैशिश्ट्य स्वाभाविक रूप से अभिव्यक्त हुआ। उमा नेहरू के निबंधो ने और महादेवी वर्मा के निबंधो, संस्मरणों और यात्रा–विवरणों ने भारतीय स्त्री की संघर्शगाथा को एक ठोस रचनात्क आधार दिया। स्वतंत्रता के बाद आई स्त्री लेखिकाओं की पीढ़ियों ने दशक दर दशक हिंदी साहित्य में अपनी सशक्त दर दशक हिंदी साहित्य में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज की। हिंदी की नई कविता को स्वरूपित करने वाले अज्ञेय द्वारा संपादित चार सप्तकों में शकुंत माथुर, कीर्ति चौधरी सुमन राजे जैसी कवयित्रिया थी नई कविता, नई कहानी, प्रगतिशील व प्रयोगवादी आंदोलन वे नाम हैं, जिनके जरिए बीसवीं सदी के उत्तरार्ध के हिदीं साहित्य को वर्गीकृत किया जाता है। इनमें से प्रत्येक धारा मे स्त्रियों के जीवन–संघर्श की आधुनिक परिस्थितियों को भली भांति रेखांकित किया। कृश्णा सोबती की कहानियों और उपन्यासों में नारी जीवन के दर्द और विभाजन की पीड़ा से उपजी उसकी जीवन स्थितियों का चित्रण हुआ, वही स्त्री की बेबाकी, उसकी स्वंत्र मनःस्थिति, उसके व्यक्तित्व का जमीन से जुड़ा और प्रामाणिक अनुभव व्यक्त हुआ। उनकी प्रख्यात रचनाएं बादलों के घेरे, मित्रो मरजानी जिंदगीनामा डार से बिछुड़ी, दिलोदानिश उनकी रची स्त्रियों का धड़कता हुआ संसार हैं। मन्नू भंडारी की कहानियों ने मध्यवर्गीय शहरी स्त्री के मन का संसार प्रस्तुत किया। उशा प्रियंवद की कहानियों और उपन्यासों ने आधुनिक स्त्री के प्रेम और जीवन–संघर्श को वाणी दी। ममता कालिया की कहानियों में स्त्री–जीवन का बदलता सत्य सामने आया।

नासिरा शर्मा, चित्रा मुदगल, मैत्रीयी पुश्पा, मृदुला गर्ग के उपन्यासों व कहानियों में नारीवादी रचनात्मक दृश्टि का विस्तार देखने को मिलता है। नासिरा शर्मा की रचनाओं में भारतीय समाज की विभिन्न परतें तथा मध्य एशियाई स्त्री–पात्रों की जिंदगी है, चित्रा मुदगल की रचनाएं मजदूर आंदोलन से लेकर महानगरीय स्त्री–जीवन को अपना विशय बनाती हैं। मैत्रेयी पुश्पा के उपन्यास व कहानियां बुंदेलखंड के ग्रामीण जीवन के परिवेश में स्त्री की कई पीढियों की संघर्शकथा को प्रस्तुत करती हैं वहीं मृदुला गर्ग के उपन्यासों–कहानियों में सातवें आठवे दशक के भारत की शहरी स्त्री के प्रेम व यौन–कामनाओं के अंतर्द्वद्व और पारिवारिक स्थितियों का गहन अंकन हुआ है।

नासिरा शर्मा के उपन्यास शाल्मली, ठीकरे की मंगनी सात नदियां एक समंदर, जिंदा मुहावरे, अक्षय वट, कुइयांजान, कागज की नाव व पारिजात तो चर्चित रहे ही। इसके अलावा उन्होने उर्दू व फारसी के जरिए ईरानी, इराकी स्त्रियों के दुःख दर्द को भी लिखा। इराक तथा अफगानिस्तान पर लिखी उनकी विस्तृत किताबों इन देशों के सामयिक इतिहस के परिवर्तनों पर जीवंत व महत्वपूर्ण दस्तावेज हैं। मैत्रेयी पुश्पा के उपन्यास इदन्नमम, चाक, बेतता बहती रही, अल्मा कबूतरी, कहे ईसंरी फाग ने बुंदलेखंड के ग्रामीण जीवन के संदर्भ में भारतीय स्त्री के अंतर्मन के द्वंद्वो व जीवन–संघर्शो को बड़े फलक पर रचा। इन सृजनात्मक कृतियों के अलावा उनकी कस्तुरी कुंडल बसै तथा गुडिया भीतर गुडिया भी एक स्त्री के लेखकीय व्यक्तित्व के निर्माण की जद्दोजहद का गहरा अंकन हैं। मृदुला गर्ग के उपन्यासों उसके हिस्से की धूप, वंशज, अनित्य, कठगुलाब, चित्तकोबरा, मैं और मैं तथा कथा–संग्रहों ने महानगरीय आधुनिक स्त्री के देह और मन के द्वद्वों को शब्द दिए। चित्रा मुद्गल के उपन्यास आंवां ने मुंबई के मजदूर आंदोलन की पृश्ठभूमि पर जीवन के चित्र रचे। प्रभा खेतान की आत्मकथा अन्या से अनन्या तथा उनके उपन्यासों आओ पेपे घर चलें तथा छिन्नमस्ता में स्त्री के द्वितीयक अस्तित्व को निर्मित करने वाली सामाजिक शक्तियों की मार्मिक चीरफाड़ हुई। आजादी के बाद की जिन दो–तीन पीढ़ियो ने हिंदी साहित्य में स्त्री–अनुभव व संवेदना को गहराई से दर्ज किया, उसकी अन्य प्रमुख रचनाकार रहीं चंद्रकिरण सौनरेक्सा, मेहरूनिशा परवेज, श्रीमती विजय चौहान, मालती जाशी, राजी सेठ, चंद्रकांता, कुसुम अंसल, सिम्मी हर्शिता, मधु कांकरिया, सुशमा बेदी, रजनी पनिक्कर, शशिप्रभा शास्त्री, उशा महाजन, रमणिका गुप्ता, कमल कुमार आदि।

बीसवीं सदी के आखिरी दशकों में हिंदी के स्त्री लेखन का दायरा सहसा अधिक विस्तृत हो गया। अलका सरावगी के उपन्यास कलिकथा वाया वाया बायपास और गीतांजलि श्री के उपन्यास, हमारा शहर उस बरस ने स्त्री के जीवन के प्रश्नों को समाज और इतिहास की व्यापक प्रक्रियाओं के संदर्भ में रखा। राजनीति और जीवन का यथार्थ–बोध इन दोनों ही लेखिकाओं की रचनाओं में परिपक्वता के साथ व्यक्त हुआ। सारा राय की कहानियों ने अतीत स्मृति और निवैक्तिकता के शिल्पा में स्त्री चेतना की अभिव्यक्ति की। जया जादवानी के उपन्यास और कहानियां पारदर्शी काव्यात्मक भाशा में स्त्री मन के अगम्य कोनों अंतरो की कथा कहती हैं।

हां, यह बात जरूर नोटिस किए जाने लायक है कि समूची बीसवीं और इक्कीसवीं सदी में हिंदी मे साहित्यालोचना तथा वैचारिक लेखन के क्षेत्र मे लगभग सन्नाटे की स्थिति रही हैं। हिंदी–क्षेत्र की अनेक स्त्रियों ने अंग्रेजी भाशा में लिखकर इतिहास, दर्शन, राजनीति आदि विधाओं में अंतर्राश्ट्रीय स्तर का लेखन–कार्य किया है। परंतु हिंदी भाशा स्त्रियों के सृजनात्क साहित्य तक ही सीमित रही। बीसवीं सदी के अंत में हिंदी में स्त्री कवयित्रियों की पूरी एक नई पीढ़ी आ गई है, जो तेजी से अपना संख्यात्मक विस्तार कर रही है। इस पीढ़ी की उपलब्धियां आना अभी बाकी है। इस काल की प्रमुख कवयित्रियां, कात्यायनी अनामिका सविता सिंह, सविता भार्गव, नीलेश रघुवंशी, तेजी ग्रोवर, शुभा, अर्चना वर्मा आदि है।

हिंदी से इतर यदि हम भारतीय भाशाओं के सहित्य की ओर नजर दौड़ाएं तो हमें एक बड़ा परिदृशक दिखाई देता है। बांग्ला, मराठी, मलयालम, तमिल, उर्दू पंजाबी, गुजराती, ओडिया आदि भाशओं में समूची बीसवीं सदी में स्त्रियों ने महान साहित्य की रचना की है। साहित्य की सभी विधाओं में स्त्री–चेतना को नए आयाम देने वाले इस साहित्य के व्यापक रूप से हिंदी अंग्रेजी तथा अन्य भारतीय भाशाओं में अनुवाद की जरूरत है। यदि हम हिंदी तथा भारतीय अंग्रेजी समेत सतस्त भारतीय भाशओ के नारीवादी दृश्टि या स्त्री चेतना की अंतर्धारा वाले साहित्य का एक सम्मिलित चित्र की ओर देखें तो यह सचमुच गर्व की बात है कि बीसवीं सदी के आखिरी पांच–छह दशकों में ही इतना विविध और चेतना संपन्न विश्वस्तरीय साहित्य रचा गया है। वस्तुतः भारत के स्त्री–साहित्य का यही संपूर्ण चित्र है। इसे भाशाओं में खंडित नहीं किया जा सकता। इसकी समग्रता ही इसका सौंदर्य है। कुर्रतुल ऐन हैदर के उपन्यास आग का दरिया, चांदनी बेगम, निशांत के सहयात्री, अगले जनम मोहे बिटिया न कीजो, कारे दराज, भारतीय समाज की उथल–पुथल, उसके सांस्कृतिक इतिहास और सामूहिक पीड़ा का विराट दृश्य रचते है। महाश्वेता देवी की बांग्ला रचनाएं 1084 वें की मां, जंगल के दावेदार, चेटिट् मुंडा का तीर आदि उपन्यास तथा सैकड़ो कहानियां विकासशील भारत की उस सच्चाई को उजागर करती हैं जो आदिवासियों को उत्पीड़ित और विस्थापित करते हुए अपनी अंध गति से भाग रही है। आशापूर्णा देवी के उपन्यास प्रथम प्रतिश्रुति और बकुलकथा बांग्ला स्त्री के अंतर्मन का दर्पण होकर समस्त भारतीय स्त्री मन की कथा बन गए हैं। बांग्ला में नवनीता देवसेन से लेकर मंदाक्रांता सेन तक स्त्री कवियों की एक लंबी और अत्यंत समृद्ध परंपरा है। मराठी भाशा में इरावती कर्वे, दुर्गा भागवत जैसी लेखिकाओं ने महाभारत के पात्रों की जो आधुनिक दृश्टि से मनोवैज्ञानिक व्याख्याएं की, वे भारतीय साहित्य की निधि हैं। मराठी स्त्री लेखिकाओं की आत्मकथा का एक विशद भंडार है। मराठी कविता कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में विगत पांच–छह दशकों में संभवतः सर्वाधिक चेतनासंपन्न और प्रगल्भ रहा है। गुजरती साहित्य में कुंदनिदा कपाडिया के उपन्यास सात दीवारों के पार आकाश ने एक नए वातारवरण का निर्माण किया था। गुजराती स्त्री–कथा स्त्री के प्रेमल मन के अंतर्द्वद्वों को आधुनिक बोध के साथ वर्णित करती है। ओडिया में प्रतिभा राय के मिथक चरित्रों पर आधारित उपन्यासों ने अतीत के नारी चरित्रों पर आधारित उपन्यासों ने अतीत के नारी चरित्रों के हदय और मस्तिश्क की गहराइयां थाही हैं। पंजाबी में दिलीप कौर टिवाणा, मनजीत टिवाणा, अमृता प्रीतम की पीढ़ी के सशक्त रचनात्मक युग के बाद लेखिकाओं की कई पीढ़ियां अपनी उपस्थिति दर्ज करवा चुकी है। उर्दू और बांग्ला में पाकिस्तान और बांग्लादेश में पिछली आधी सदी में काफी समृद्ध साहित्य रचा गया है। पाकिस्तानी स्त्रियों ने कविता के क्षेत्र में और बांग्लादेशी स्त्रियों ने उपन्यास के क्षेत्र मे मुस्लिम समाज के परिप्रेक्ष्य में स्त्री के सामाजिक और निजी अनुभवों को संवेगात्मक भाशा में रचा है। किश्वर नाहीद, जाहिदा जैदी, अदा जाफरी, परवीन शकिर, फहमीदा रियाज, जहरा निगाह, सारा शगुफ्ता, अजरा अब्बास, जैसी दर्जनों कवयित्रियों मानो

भारतीय अपमहाद्वीप में स्त्री के दुःखो और अस्तित्वगत प्रश्नों का प्रतिनिधिक स्वर हैं। यह सूची काफी विस्तृत है। बांग्लादेश के उपन्यासकारों में तहमीना अनम, तसलीमा नसरीन ने विभाजन, साप्रदायिक तनाव और स्त्री की यौन स्वतंत्रता को सशक्त स्वर दिया है।

आज भारतीय भाशाओं में स्त्री–चेतना से संपन्न साहित्य का लेखन विपुल है। पर यह यात्रा आसान नहीं थी। भारतीय नवजागरण व स्वंत्रता–संग्राम में निहित नए समाज के गठन के स्वप्न ने इस चेतना को पैदा किया था। मराठी, बांग्ला, उर्दू, मलयालम अनेक भाशाओं की लेखिकाओं ने अनाम रह कर उस समय की पत्र–पत्रिकाओं में स्त्री प्रश्न से जुडे लेख आदि लिखे। मराठी में ताराबाई शिंदे ने स्त्री पुरूश तुलना जैसी बहुहचर्चित पुस्तक लिखी। ताराबाई ने पुरूश–प्रभुत्व और पुरूश–श्रेश्ठता को सीधे चुनौती दी। उन्होनें व्यावहारिक जीवन के उदाहरणों तथा तर्को द्वारा स्त्री–पुरूत्री की तुलना कर इस आधार को वैचारिक रू‍प से निरस्त किया कि स्त्री का जीवन परंपरागत भूमिकाओं में बंधा रहने व पुरूश की गुलामी के लिए ही बना है। इसी प्रकार पंडित रमा बाई ने अपनी प्रख्यात मराठी पूस्तक हिंदू स्त्री का जीवन में उच्च–वर्ण की हिंदू स्त्री के विडंबनात्मक जीवन और पितृसत्ता के आधारों को ही चुनौती दी और स्त्री–शिक्षा व स्त्री–सशक्तीकरण का पाठ प्रस्तुत किया।19 वीं सदी के अंत तक स्त्री संबंधी उन समस्त सवालों को जो भारतीय सामाजिक–जीवन में मौजूद थे, साहित्य में प्रमुखता से जगह मिलने लगी। स्त्री–लेखिकाओं की पूरी पीढी तत्कालीन पत्र–पत्रिकाओं में वैचारिक व रचनात्कम लेखन के माध्यम से इन प्रश्नों पर गंभीर अनुभवजन्य लेखन प्रस्तुत करने लगी। इस प्रक्रिया ने पुरूश–लेखन को भी काफी हद तक बदला। अब साहित्य में नई तरह के स्त्री चरित्र आने लगे। शंरतचंद्र रवीद्रनाथ, प्रेमचंद, प्रसाद, तकशि पिल्लै जैसे दर्जनो भारतीय लेखकों ने भारत की नई स्त्री का स्वप्न गढ़ा।

अब 19 वीं सदी और 20 वीं सदी के आंरभिक स्त्री–लेखन पर काफी कुछ अनुसंधान कार्य हो चुका है। समय में खोई हुई अनेक कृतियां खोज निकाली गई है। इस क्षेत्र में उमा चक्रवर्ती की पुस्तक रीराइटिंग हिस्ट्री एक उल्लेखनीय उदाहरण है। परंतु इस बात की आवश्कता है कि समस्त भारतीय भाशाओं में आरंभिक तीन–चार दशकों में हुएं समस्त नारीवाद–लेखन को समग्रता में प्रस्तुत किया।

जाए आज नारीवाद भारतीय भाशाओं में एक लंबी यात्रा तय कर चुका हैं। बहुत बार यह शब्द साइबर माध्यम की फौरी और चलताऊ बहसों, उच्चवर्गीय प्रतीकात्मक स्त्री–संगठनों तथा कई तरह के अवसरवादी एनजीओ आदि के कारण व्यंग्य और लांछन का विशय बनता रहा है। परंतु नारीवाद एक व्यापाक विचारधारा है। सतही संगठनों व्यक्तियों बहसों, समूहो आदि कि आधार पर इसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। यह आंदोलन भारत में राजनीतिक रूप से उस तरह जड़ें नहीं पकड़ सका, जिस तरह इसने यूरोप और अमेरिका में बीसवीं सदी में साठ–सत्तर के दशक में अपनी जगह बनाई थी। भारत में यह अंग्रेजी भाशा के माध्याम से हुए गंभीर बौद्धिक कार्यो तथा भारतीय भाशाओं में विभिन्न विधाओं में हुए रचनात्मक लेखन में अपना विस्तार करता रहा है। तात्पर्य यह कि नारीवादी–चेतना का प्रसार तो हुआ है, पर इसने किसी व्यापक नारीवादी–आंदोलन का रूप ग्रहण नहीं किया। नारीवाद की देश–काल की भिन्नता के अनुंसार अनेक व्यख्यांए होती रही हैं। पश्चिमी देशों और अमेरिका में नारीवाद के प्रश्न अलग रहे, उसी के अनुसार उनका स्वरूप भी भिन्न हुआ। एशियाई देशों में स्त्रियों की समस्याओं का रूप अत्यंत जटिल और सांस्कृतिक–सामाजिक ढांचे से गहनता से बद्ध रहा है। एशिया के मुस्लिम देशों में स्त्री के अस्तित्व की समस्याएं अलग स्तर की रही है। भारत जैसे देशों में उनका एक अन्य स्तर रहा है। नारीवाद के संबंध में दो मान्यताएं मुख्य रूप से विकसित हुई। पहली यह कि नारी जैविक रूप से भिन्न संरचना है। दूसरी मान्यता के अनुसार उसकी पराधीनता का कारण सामाजिक व सांस्कृतिक ढ़ांचे में है। सिमोद द बोउवार ने इसीलिए कहा था। कि ''स्त्री पैद नहीं होती, बना दी जाती हैं।'' नारीवादी की सैद्धांतिकी के विकास ने पिछली पूरी एक सदी में कई चरण पार किए हैं, जिसे प्रायः नारीवाद की पहली, दूसरी और तीसरी लहर के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। बैट्टी फीडन, एम्मा गोल्डमान, हेलेन फिशर, केट मिलेट, जर्मन ग्रीर, एवलीन रीड, ग्लोरिया स्टीनम आदि प्रखर नारीवादी विचारक हैं, जिन्होने इतिहास, समाज संस्कृति, मानवशास्त्र, मनोविज्ञान साहित्य दर्शन आदि के संदर्भो में नारी से जुड़े प्रश्नों और पितृसत्ता के स्वरूप

अत्यंत गंभीर व शोधपूर्ण वैचारिकी का निर्माण किया है। यूरोप और अमेरिका में ज्ञान के क्षेत्र में हुए इस ऐतिहासिक महत्व के कार्य ने समूची दुनिया में नारीवादी–चिंतन को प्रभावित और स्वरूपित किया है। इन पुस्तकों के अनुवाद हालांकि छुटपुट ही हुए हैं, पर आलेखों आदि के जरिए हमारे देश की भाशाओ तक इनके विचार पहुंचे है।

नारीवाद एक वैश्विक विचारधारा है। इस विचारधारा का द्वंद्व दो शक्तियों या दो शक्तियों या दो विचारों से निरंतर रहा है। यथास्थितिवादी पितृसत्तात्मक समाज के विरोध में यह पैदा हुई। उससे इसका सतत टकराव रहा। परंतु समाज–परिवर्तन की सर्वप्रमुख विचारधारा साम्यवाद से भी इसका तीखा विरोध रहा। साम्यवाद और नारीवाद के बीच का यह विरोध लक्ष्य को लेकर नहीं, उसकी प्रक्रिया को लेकर था। साम्यवाद की परंपरागत विचारधारा की व्याख्या प्रायः इस प्रकार की जाती रही कि वर्ग–विभेद ही प्रमुख समस्या है। सारा संघर्श उसे ही केंद्र में रखकर किया जाना चाहिए। वर्ग–मुक्त समाज में नारी भी मुक्त होगी ही। पर नारीवादी विचारकों ने इससे असहमित जाहिर की। नारी–प्रश्नों को अलग से रेखांकित करने तथा उस पर संघर्श करना आवश्यक बताया।

ये सारे द्वंद्व बीती सदी के थे। इक्कीसवीं सदी के दो दशक गुजर जाने के बाद समाज और मनुश्य के अस्तित्व में बहुत परिवर्तन नहीं हुआ है, पर विश्व – राजनीति, विज्ञान, तकनीक और संस्कृति के ऊपरी संस्तरों में गहरे परिवर्तन हो गए है। पुराने आंदोलन व प्रश्न अप्रासंगिक हो चुके हैं। समस्याएं अब भी अनसुलझी हैं। आगत युग नई वैचारिकी, अधिक सुसंगत व समग्र सार–संकलन तथा बीती एक सदी का अनुभव उसे संभवतः एक नई शक्ति और नया मोड़ दे। नारीवादी–आदोलन, नारीवादी बौद्धिक–विमर्श और नारीवादी–सृजन में एक नए तारतम्य की जरूरत है, साथ ही इस आंदोलन के पूरब और पश्चिम में बंटे स्थानीय स्वरूपों की जगह एक ऐसे स्वरूप की भी जो संसार भर की स्त्रियों के साझे दुःख और साझे स्वप्न का महाप्रवाह बन सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. स्त्री की दुनिया–मधुरेश पेज सं0 – 31
2. महिला कहानी की दुनिया :– पेज सं0 –161
3. स्त्री और साहित्य :– योजना सितम्बर 2021 नारी शक्ति
4. स्त्री दर्पण :– गरिमा श्रीवास्तव अनन्य प्रबन्धन
5. स्त्री विमर्श और नेयश्य राग :– कमकेश कुमारी
6. साहित्य रचनाकारों का स्त्री :– चिन्तन पेज सं0 – 48

❖◆❖